अलङ्कारसर्वस्वम्

सन्देह अलङ्कार

।। *विषयस्य संदिह्यमानत्वे संदेहः* ।।

अभेदप्राधान्ये आरोप इत्येव। विषयः प्रकृतोऽर्थः। यद्भित्तित्वेनाप्रकृतः संदिह्यते। अप्रकृते संदेहे विषयोऽपि संदिह्यत एव। तेन प्रकृताप्रकृतगतत्वेन कविप्रतिभोत्थापिते संदेहे संदेहालंकारः। स च त्रिविधः। शुद्धो निश्चयगर्भो निश्चयान्तश्च। शुद्धो यस्य संशय एव पर्यवसानम्। यथा-

किं तारुण्यतरोरियं रसभरोद्भिन्ना नवा वल्लरी
लीलाप्रोच्छलितस्य किं लहरिका लावण्यवारांनिधेः।
उद्गाढोत्कलिकावतां स्वसमयोपन्यासविस्रम्भिणः
किं साक्षादुपदेशयष्टिरथवा देवस्य शृङ्गारिणः ।।

निश्चयगर्भो यः संशयोपक्रमो निश्चयमध्यः संशयान्तश्च। स यथा-

अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः
कृशानुः किं साक्षात्प्रसरति दिशो नैष नियतम्।
कृतान्तः किं साक्षान्महिषवहनोऽसाविति चिरा-
त्समालोक्याजौ त्वां विदधतिविकल्पान्प्रतिभटाः॥

निश्चयान्तो यत्र संशय उपक्रमो निश्चये पर्यवसानम्। यथा-
इन्दुः किं क्व कलङ्कः सरसिजमेतत्किमम्बु कुत्र गतम्।
ललितसविलासवचनैर्मुखमिति हरिणाक्षि निश्चितं परतः ॥

क्वचिदारोप्यमाणानां भिन्नाश्रयत्वेन दृश्यते। यथा-
रञ्जिता नु विविधास्तरुशैला नामितं नु गगनं स्थगितं नु।
पूरिता नु विषमेषु धरित्री संहृता नु ककुभस्तिमिरेण ॥

अत्रारोपविषयतिमिरे रागादि तर्वादिभिन्नाश्रयत्वेनारोपितम्। केचित्त्वध्यवसायाश्रयत्वेन संदेहप्रकारमाहुः।

- सन्देह अलङ्कार का पृष्ठभूमि -

भामह ने सर्वप्रथम ससंदेह अलंकार के नाम से इसका निरूपण किया था। दंडी को संशयोपमा में इसका अंतर्भाव विवक्षित है उन्होंने इसका पृथक् निरूपण नहीं किया है। संशय के विपरीत निर्णय में उन्होंने निर्णयोपमा भी मानी है।

आचार्य दण्डी के अनुसार संशयोपमा यथा-

किं पद्ममन्तर्भ्रान्तालि किं ते लोलेक्षणं मुखम् ।
मम दोलायते चित्त-मितीयं संशयोपमा ।।

यह क्या भीतर मंडराते हुए भ्रमरों वाला कमल है? अथवा क्या तुम्हारा चंचल नयनों वाला मुखड़ा है? मेरा मन इन दोनों के बीच झूल रहा है।

आचार्य दण्डी के अनुसार निर्णयोपमा यथा-

न पद्मस्येन्दु-निग्राह्यस्येन्दु-लज्जाकरी द्युतिः।
अतस्त्वन्मुखमेवेदम् इत्यसौ निर्णयोपमा ।।

जब उपमेय कौन है, और उपमान कौन है, यह निर्णय देकर दोनों में से सादृश्य व्यक्त किया जाता है , तब निर्णयोपमा होती है। जैसे चंद्र के उदय से पद्म संकुचित हो जाता है। उसकी शोभा चंद्रमा के लिए लज्जा कारक नहीं हो सकती, इसलिए यह तुम्हारा मुख ही है। - कथन में यह पद्म नहीं है, क्योंकि पद्म होता तो एक तो वह चांदनी में संकुचित हो जाता, दूसरे चंद्रमा इसके आगे शरमाता नहीं। इस निश्चय से मुख और पद्म में सादृश्य प्रकट होता है।

उद्भट के समय इसका अभिधान संदेह तथा ससंदेह दोनों ही था। "ससन्देहं विदुर्बुधाः" और "सन्देहनाम तत्" इस प्रकार दोनों ही अभिधान से उन्होंने इसका उल्लेख किया है। भोज तथा रुद्रट इसे संशयालङ्कार कहते हैं। कुंतक, मम्मट, रुय्यक, शोभाकर, विश्वनाथ, जयदेव तथा अप्पयदीक्षित आदि प्रमुख आलंकारिकों ने ससंदेह के स्थान पर इसे केवल संदेह कहना उचित समझा है।

- *लक्षण - विषयस्य संदिह्यमानत्वे संदेहः*

विषय यदि सन्दिह्यमान हो तो वहां पर संदेह अलंकार होता है।

अभेदप्राधान्ये आरोप इत्येव। विषयः प्रकृतोऽर्थः। यद्भित्तित्वेनाप्रकृतः संदिह्यते। अप्रकृते संदेहे विषयोऽपि संदिह्यत एव। तेन प्रकृताप्रकृतगतत्वेन कविप्रतिभोत्थापिते संदेहे संदेहालंकारः।

अभेद की प्रधानता होने पर आरोप माना जाता है। यह आरोप रूपक अलंकार से अन्वित होकर आया है। विषय का अर्थ यहां पर प्रकृत अर्थ है अर्थात् उपमेय है। इस विषय को आधार बनाकर अप्रकृत अर्थात् उपमान भी संदिह्यमान होता है। अप्रकृत(उपमान) पर संदेह होने पर प्रकृत विषय भी संदेह का विषय बन जाता है। अतः प्रकृत और अप्रकृत दोनों पर कवि प्रतिभा द्वारा उत्थापित संदेह संदेहालंकार होता है।

- भेद -

स च त्रिविधः। शुद्धो निश्चयगर्भो निश्चयान्तश्च।

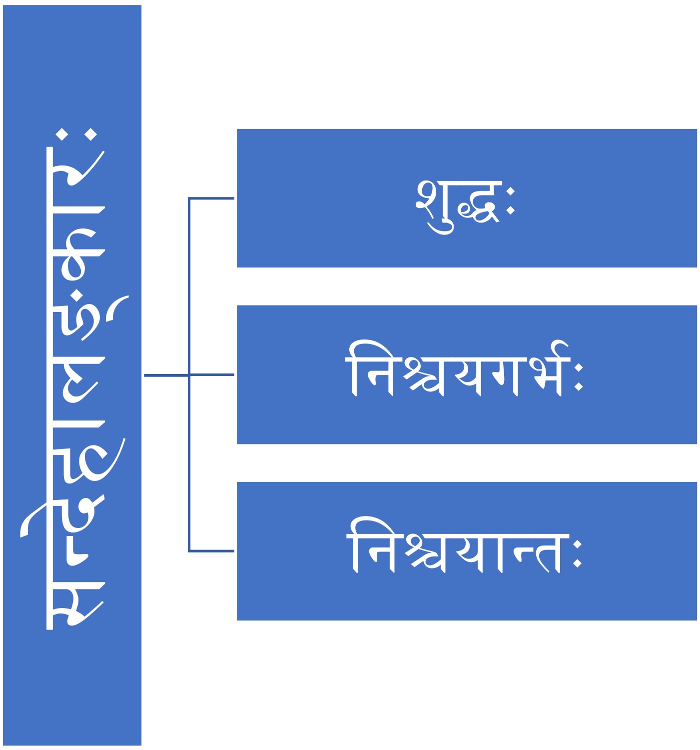

- ## शुद्धः

शुद्धो यस्य संशय एव पर्यवसानम्। यथा-
किं तारुण्यतरोरियं रसभरोद्भिन्ना नवा वल्लरी
लीलाप्रोच्छलितस्य किं लहरिका लावण्यवारांनिधेः।
उद्गाढोत्कलिकावतां स्वसमयोपन्यासविस्रम्भिणः
किं साक्षादुपदेशयष्टिरथवा देवस्य शृङ्गारिणः ।।

जहां केवल ही केवल संशय रहता है, संशय में ही पद्य का समापन हो जाता है, वह शुद्ध संदेह का स्थल है। किं तारुण्यतरोरियं .... इस उदाहरण में अंत तक संशय ही है। कहीं पर निश्चय का आभास तक नहीं अतः यह शुद्ध संदेह अलंकार का स्थल है।

- ## निश्चयगर्भः

निश्चयगर्भो यः संशयोपक्रमो निश्चयमध्यः संशयान्तश्च। स यथा-
अयं मार्तण्डः किं स खलु तुरगैः सप्तभिरितः
कृशानुः किं साक्षात्प्रसरति दिशो नैष नियतम्।
कृतान्तः किं साक्षान्महिषवहनोऽसाविति चिरा-
त्समालोक्याजौ त्वां विदधतिविकल्पान्प्रतिभटाः॥

जहां प्रारंभ में संशय एवं अंत में भी संशय किंतु मध्य में निश्चय का आभास होता है वहां पर निश्चयगर्भ संदेह अलंकार होता है। प्रस्तुत उदाहरण में राजा को देखकर प्रतिपक्ष के सेना विभिन्न प्रकार की कल्पना करते हुए राजा को सूर्य, अग्नि, यमराज समझते हुए फिर उससे विरत होकर अंत में किसी भी निर्णय पर नहीं पहुंचते है । मध्य में जो कुछ समय तक निश्चय करने का प्रयास करते हैं तत्क्षण निश्चयगर्भ का स्थल है ।

- ## निश्चयगर्भः

निश्चयान्तो यत्र संशय उपक्रमो निश्चये पर्यवसानम्। यथा-
इन्दुः किं क्व कलङ्कः सरसिजमेतत्किमम्बु कुत्र गतम्।
ललितसविलासवचनैर्मुखमिति हरिणाक्षि निश्चितं परतः ॥

जहां पर प्रारंभ में संशय किंतु अंत में निश्चय हो जाता है वहां पर निश्चयान्त संदेह अलंकार होता है।प्रस्तुत उदाहरण में पहले नायिका के मुख पर चंद्रमा का संदेह है किंतु अंत में ललित विलास वचनों से यह नायिका का मुख है यह निश्चय होने पर यह निश्चयान्त संदेह अलंकार का स्थल है।

- डॉ.अशोककुमारशतपथी